ORIGINAL RESEARCH PAPER

Journalism & Mass Communication

नवजागरण काल और स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता के योगदान पर एक अध्ययन

KEY WORDS: पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम जनजागृति नवजागरण

डॉ. दिलावर सिंग

एम .ए ,एम. फिल, पी.एच.डी, नेट एसोसिएट प्रोफेसर, जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन डिपार्टमेंट शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज सिरसा(हरियाणा)।

ABSTRACT

भारतीय राष्ट्रीयता का उद्देश्य सांस्कृतिक आधार पर हुआ है, अनंत काल से अध्यात्म तथा संस्कृति भारत के विशाल भूभाग को एक सूत्र में बांधे रही हैं। राजनीतिक सत्ता–संघर्षों से परे, भारत जन की सांस्कृतिक जागरूकता राष्ट्र के स्वरूप का निर्धारण करती रही है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् सुप्त सांस्कृतिक तत्व को जाग्रत करने का कार्य पत्रकारिता के माध्यम से किया जाने लगा। वैसे देश में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार तथा तेज गति से हो रहे धर्मांतरण की प्रतिक्रिया देश में 18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में आरंभ हो चुकी थी1 लेकिन इसका मुखर स्वरूप प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात की पत्रिका में दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध में अवलोकन शोध पद्धति के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता के योगदान का विश्लेषण किया गया है शोध अध्ययन से यह परिणाम निकल कर आया कि स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है पत्रकारिता ने नए केवल जन–जन तक जागृति फैलाने का कार्य किया बल्कि प्रत्येक नागरिकों तक आजादी के विचारों का सही प्रवाह किया है पत्रकारिता ने जनता में सर्वाधिक दोषो को निर्भयतापूर्वक प्रकट करने की शक्ति प्रदान की है

परिचय –

भारतीय हिंदी पत्रकारिता के युगांतर के प्रतीक भारतेंदु हरिश्चंद्र माने जाते हैं। वैसे भारतेंदु के आगमन से पूर्व ही पत्रकारिता का आरंभ हो चुका था। हिंदी भाषा का प्रथम समाचार पत्र 'उदंड मार्तंड' 30 मई 1826 को कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर शुल्क ने कोलकाता से निकाला। सुखद आश्चर्य की बात यह थी कि यह पत्र बंगाल से निकला और बंगाल में हिंदी पत्रकारिता के बीच उद्भव हुआ। इस पत्र के माध्यम से भारतीयों की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को प्रचारित करना और उनकी समस्याओं को उजागर करना था, जिसमें भारतीयों को जाग्रत् करना तथा उनके हितों की रक्षा करना भी निहित था। यह बात इसके मुखपृष्ठ पर छपी पंक्ति से ही ज्ञात होती है कि 'यह उदंत मार्तंड अब पहले–पहल हिंदुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया।'

यह केवल एक चेतना भर थी। प्रसार संख्या कम होने के पश्चात् भी लोक प्रभाव अधिक था। भारतीय पत्रकारिता केवल घटनाओं पर केंद्रित नहीं रही है। समाचार–पत्रों एवं पत्रिकाओं का मूल्य उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करना रहा है। यही उसकी महानता है। आरंभिक हिंदी पत्रकारिता समाज तथा धर्म को केंद्रित करते हुए आगे बढ़ रही थी। राष्ट्र की परिकल्पना कभी धर्म तथा संस्कृति के प्रतिकूल नहीं रही। धर्म में ही राष्ट्र समाहित रहा है। संभवतः इसी भाव का आदर करते हुए महात्मा गांधी कहते हैं कि समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जाग्रत करना है। तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

शोध उद्देश्य

1.पत्रकारिता का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान का अध्ययन करना
2.नवजागरण में पत्रकारिता की भूमिका का अध्ययन करना3

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में अवलोकन शोध पद्धति के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है आजादी के आंदोलन के समय भारत की अनेक स्थानों से विविध भाषाओं में समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ इन प्रकाशनों का संचालन विविध क्षेत्रों से जुड़े देशभक्तों जैसे साहित्य जगत समाज सुधारक मनोचिंतक दार्शनिक आदि ने किया इन सभी प्रकाशनों का स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव का विश्लेषण अवलोकन शोध पद्धति के द्वारा किया गया है

4 नवजागरण काल में पत्रकारिता

19वीं शताब्दी को भारत के नव नवजागरण का काल कहा जाता हैं। इसमें जहां सहयोग समाज सुधार आंदोलनों का रहा, वहीं समाचार–पत्रों ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया। यह भी समझना आवश्यक है की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पूर्व प्रकाशित समाचार–पत्र तथा धार्मिक आंदोलन कर चुके थे। हिंदी भाषा के स्वरूप का निर्धारण भी इस युग में हो रहा था। यदि हम भारतेंदु काल से पूर्व की हिंदी पत्रकारिता को देखें तो उनकी भाषा में हिंदी के संस्कारों का अभाव है लेकिन धीरे–धीरे भाषा अपना आकार भी ग्रहण कर रही थी। दो बातें सामान्यतः उस काल में दिखाई देती है–पहला यह कि समाचार पत्र और पत्रिकाओं ने आरंभ से ही भारतीयों के हित के विचार को जाग्रत करने का कार्य किया। वे हिंदी को स्वतंत्र आकार तथा प्रकार प्रदान कर रहे थे। बंगाल से निकलने वाला 'उदंड मार्तंड' जहां हिंदी भाषी शब्दावली का प्रयोग करके भाषा निर्माण का प्रयास कर रहा था वहीं काशी से निकलने वाला प्रथम साप्ताहिक पत्र 'बनारस अखबार' पूर्णतया उर्दू और फारसीनिष्ठ रहा। वह केवल देवनागरी लिपि में प्रकाशित होता था, लेकिन भाषा उर्दू से भिन्न नहीं थी, लेकिन विकास की यात्रा लगातार आगे बढ़ रही थी। विशेष तथा संकल्पनिष्ठ सुधार का कार्य 1867 के पश्चात् तेजी से आगे बढ़ा।

भारतेंदु युग से पूर्व ही हिंदी का प्रथम समाचार पत्र दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' और आगरा से 'प्रजा हितैषी' का प्रकाशन हो चुका था लेकिन यह समाचार पत्र एक सांस्कृतिक आंदोलन नहीं बन पाए इसका श्रेय भारतेंदु को ही जाता है। केवल पत्र के माध्यम से ही नहीं अपितु सार्वजनिक स्वभाव से भी उन्हेंने हिंदी तथा हिंदुस्तान के लिए प्रखरता के साथ प्रचार किया। यही कारण था कि देश में ऐसे युवा पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे आए, जो पूरी तरह से राष्ट्रनिष्ठ भाव से परिपूर्ण थे।

धार्मिक आंदोलन एंव पत्रकारिता

असल में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् देश में अनेक धार्मिक आंदोलन भी होने आरंभ हो गए थे। तत्कालीन साहित्यकार, जो पत्रकार भी थे, उन्होंने युगानुरूप अपनी दिशा का निर्धारण किया। इस वैचारिक समूह का नेतृत्व भारतेंदु कर रहे थे। उन्होंने योग धर्म को पहचाना और योग को दिशा प्रदान की। भारतेंदु के पत्र पत्रिकाओं में राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर थे। जागरण और स्वाधीनता की चेतना से जोड़ते हुए 1867 में 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन उन्होंने किया, जिसका मूल्य वाक्य था–अपधर्म छूटे, सत्त्व निज भारत गहै। उस समय केवल विदेशी शासन ही हमारी व्यवस्था को प्रभावित कर रहा था। विदेशी प्रभाव में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था भी कम हो रही थी। शताब्दियों की परतंत्रता के कारण भाषा का स्वरूप भी विदेशी हो चुका था। अतः भारत द्वारा सत्त्व ग्रहण करने के उद्देश्य को लेकर भारतेंदु ने हिंदी पत्रकारिता का विकास किया और आने वाले पत्रकारों के लिए दिशा निर्माण किया। इस कारण हम कह सकते हैं कि वास्तविक राष्ट्रवादी पत्रकारिता का विकास भारतेंदु काल में ही हुआ। बीसवीं शताब्दी के आते–आते ब्रिटिश की पत्रकारिता भी यह अनुभव करने लगी थी कि भारतीय पत्रकारिता तथा वंदे मातरम का नारा भारत में क्रांति की आधारशिला तैयार कर रहे हैं।

भारतेंदु ने 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'बाला बोधिनी' नामक पत्र निकाले। 'कवि वचन सुधा' को 1875 में साप्ताहिक किया गया, जबकि अनेक समस्याओं के कारण 1885 ई. में इसे बंद कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि भारतेंदु ने घर फूंककर हिंदी पत्रकारिता के महान् कार्य को जीवित रखने का प्रयास किया। खेद का विषय यह है कि उनको कहीं से भी सहायता नहीं मिल पाई। लोग–प्रतिष्ठा अधिक होने के कारण वे स्वयं भी सहायता लेने में संकोच करते थे। कोई ऐसा भी नहीं था, जो स्वेच्छा से उनकी सहायता करता। इस नाते एक उत्तम प्रयास भी बाधित होता रहा।

सन् 1873 में भारतेंदु ने 'हरिश्चंद्र' मैगजीन का प्रकाशन किया जिसका नाम 1874 में बदल कर 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया गया। इस पत्रिका में देश की समाजिक स्थिति को केन्द्रित किया जाता था। देश के प्रति सजगता, समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना, मानवीयता, स्वाधीन होने की चाह मुख्य विशेष रहे। भारतेंदु काल के पत्रकार यह भी अनुभव करते थे कि यदि नारी सजग नहीं है तो देश के भाग्य को नहीं बदला जा सकता। इस नाते स्त्रियों के गृहस्थ धर्म और जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए भारतेंदु ने 'बाला बोधिनी' पत्रिका निकाली, जिसका उद्देश्य महिलाओं के हित की बात करना था। यह पत्रिका भारत में नारी जागरण का पहला प्रभावी प्रयास साबित हुआ। इसकी प्रेरणा से काशी में 'महिला मंडलों' की भी स्थापना हुई थी। महाराष्ट्र में तिलक का 'केसरी' क्रांति के भाव को जाग्रत् कर रहा था। शिवाजी जयंती और गणेश उत्सव तथा हिंदू एकता के प्रति जनचेतना का विकास 'केसरी' ने किया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतेंदु की प्रेरणा से अनेक मनीषियों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। पंडित बालकृष्ण भट्ट का 'हिंदी प्रदीप' इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास था, जिससे देश की सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर पैने आलेखों का प्रकाशन होता था। पत्र की शैली व्यंग्य और विनोद का सम्मिश्रण थी तथा व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए जनजागृति का प्रयास करना इनका उद्देश्य था। 'हिंदी प्रदीप' काफी लोकप्रिय होता चला गया। भारतीयों की वाणी बने इस समाचार पत्र पर अनेक बार आर्थिक दंड भी लगाया गया लेकिन, श्री भट्ट निर्भय होकर प्रकाशन करते रहे और अपनी वाणी को किसी के दबाव के परिवर्तित नहीं किया।

सन् 1857 के संग्राम से प्रेरणा लेकर भारतवासियों की जागृति का यह प्रयास चल ही रहा था कि 14 मार्च 1878 को 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' लागू कर दिया गयां यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रहार करने वाला कानून था। लॉर्ड लिटन द्वारा इस कानून का उद्देश्य पत्र–पत्रिकाओं की अभिव्यक्ति को दबाना और उनकी स्वतंत्रता का हनन करना था। 'हिंदी प्रदीप' ने इस एक्ट की न केवल भर्त्सना की, बल्कि उद्बोधनपरक लेख भी लिखे। इस समाचार पत्र में सरकार के विरोध का क्रम कभी रुका नहीं। यही कारण था कि 3000 का अर्थदंड उन पर लगा दिया गया, जिसका भुगतान वे नहीं कर सके और 'हिंदी प्रदीप' का प्रकाशन बंद हो गया।

19वीं शताब्दी में साहित्यकार तथा पत्रकार में कोई स्पष्ट तथा ठोस विभाजन नहीं था। विशेषकर हिंदी पत्रकारिता को गति देने तथा उसको आकार देने का महान् कार्य उन ज्ञानवंत मनीषियों द्वारा ही किया गया, जो हिंदी साहित्य के संवर्धन का कार्य कर रहे थे। वह समय पत्रकारिता भी शुद्ध साहित्य की श्रेणी में आती थी। विचार संप्रेषण का यह पत्रकारिता अभियान वर्ष 1860 के पश्चात् प्रखर तथा तेज होता चला और जब भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनकी मंडली ने लेखक पत्रकार हिंदी की सार्वजनिक दुनिया में सक्रिय होते गए। विशेष महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिंदी में गद्य लेखन का वास्तविक विकास भारतेंदु काल में ही हुआ। इस विकास का प्रभाव पत्रकारिता के विस्तार पर भी दिखाई देता है।

सच तो यह है कि हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव काल भारतीय राष्ट्रीयता और हिंदी भाषा के विकास की कहानी कहता है। 19वीं शताब्दी के प्रथम खंड में हिन्दी अपनी अस्मिता को प्रकट नहीं कर पाई थी। जो 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शनैः–शनैः प्रकट होने लगी। इसका अर्थ यह है कि वर्णित कालखंड की पत्रकारिता बहुविध वैचारिक अभियानों को स्वयं में समेटे थी। उसका उद्देश्य केवल साम्राज्यवादी शक्तियों के विरोध तक सीमित नहीं था। उसका प्रयोजन पूर्ण भारतीयता के प्रति जनमानस को बौद्धिक तथा व्यवहारिक रूप से तैयार करना था। इससे काफी सफलता भी मिली। हिंदी को अपनी अस्मिता प्रदान की गई। द्विवेदी योग के आते–आते हिंदी भाषा शब्द भंडार तथा वाक्य विन्यास के आधार पर एक समर्थ भाषा के रूप में स्थापित होने लगी थी। इसका श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है। 'सरस्वती' तथा 'प्रभा' जैसी पत्रिकाओं ने हिंदी को समरूप तथा विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है किस युग की पत्रकारिता के उद्देश्य बहुआयामी थे। एक ओर राष्ट्रीयता की चेतना के साथ–साथ राजनीति की कलई खोलना तो दूसरी और सामाजिक चेतना को जाग्रत करना और हिंदी को उसकी प्रतिष्ठा प्रदान करना भी परम लक्ष्यो में सम्मिलित था। जहां तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रश्न है, हिंदी पत्रकारिता में उनका योगदान युगांतरकारी रहा। इस महान कार्य के लिए सबसे त्यागमय जीवन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का रहा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से ज्ञानवर्धन करने के साथ–साथ नए रचनाकारों को भाषा का महत्व समझाया व गद्य और पद्य के लिए राह निर्मित की। यही कारण है कि उनके द्वारा प्रशिक्षित लेखक बाद में देश के महान् साहित्यकार तथा पत्रकार बने। महावीर प्रसाद द्विवेदी की यह पत्रिका मूलतः साहित्यिक थी और हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त से लेकर कहीं ना कहीं निराला के निर्माण में इसी पत्रिका का योगदान था परंतु साहित्य के निर्माण के साथ राष्ट्रीयता का प्रसार करना भी इसका उद्देश्य था। यदि हम इसके पश्चात की पत्रकारिता का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि भारतीयता का प्रखर स्वर इस कॉल की विशेषता रही है। द्विवेदी जी ने भाषा को समृद्ध करके नवीन साहित्यकारों को राह दिखाई। उनका वक्तव्य है कि हमारी भाषा हिंदी है। उसके प्रचार के लिए गवर्नमेंट जो कुछ कर रही है, सो तो कर ही रही है, हमें चाहिए कि हम अपन घरों का अज्ञान तिमिर दूर करने और अपना ज्ञान बल बढ़ाने के लिए इस पुण्य कार्य में लग जाएं।

यही समय था जब राष्ट्रभक्ति तथा पत्रकारिता समानार्थी शब्द हो चुके थे। साहित्यकार तथा पत्रकार एक ही थे। उनका पूरा जीवन साहित्य तथा पत्रकारिता के माध्यम में देश की सेवा करना था। ऊपर से क्रूर अधिनायकवादी व्यवस्था। ऐसे में किसी भी पत्रकार या पत्र प्रकाशन का कंगार होना स्वभाविक था। भारतेंदु युग में लेखकों को रॉयल्टी नहीं दी जाती थी, समय–समय पर प्रकाशक लेखक की आर्थिक सहायता करना रहता रहता था, लेकिन कुछ लेखक ऐसे भी थे जो सहायता नहीं लेना चाहते थे। भारतेंदु एक साथ कई पत्र पत्रिका निकालने के कारण कर्ज में डूब चुके थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था, पर उन्होंने किसी से सहायता नहीं मांगी। उनके प्रकाशक 'खड्‌ग विलास प्रेस' के स्वामी रामदेव सिंह थे। वह काफी पैसे वाले थे जब उन्हें ज्ञात हुआ कि भारतेंदु कर्ज तथा मर्ज में फंसे हैं तो उन्होंने उनकी आर्थिक सहायता करने का विचार बनाया और की भी। परंतु पंडित अमृतलाल चक्रवर्ती जैसे राष्ट्रनिष्ठ पत्रकार को कर्ज के कारण जेल जाना पड़ा। दुर्गा प्रसाद जैसा पत्रकार तथा लेखक अत्यंत दीन–हीन जीवन जीने के लिए विवश हुआ। यह एक लग्न थी देश के लिए। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा आजादी के मध्य की 9 दशको की पत्रकारिता को देखें तो वह स्वतंत्रता के पश्चात की पत्रकारिता में मात्रात्मक रुप से काफी पीछे थी और गुणात्मक रूप से कमजोर। पर इसकी राष्ट्रय उपासना का कोई सानी नहीं था।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन की मुख्य चेतना नवजागरण बहुविध विकसित प्रवृत्तियां हैं, जिसमें केवल राजनीति तथा सामाजिक विषयों के उभार पर ही विवेचना को केंद्रित नहीं किया गया, बल्कि यह भी देखने का प्रयास हुआ कि भाषा कैसे अपने तेवर तथा स्वरूप को परिवर्तित करती है? भारतेंदु काल से पूर्व की हिंदी का स्वरूप उसके पश्चात् की हिंदी से पृथक् रहा है। इसका पता हमें उस कालखंड के प्रारंभिक तथा मध्यकाल में परिवर्तित भाषा से चला है। इससे यह सिद्ध होता है कि जैसे–जैसे किसी राष्ट्र में सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है तो वहां पर प्रयोग की जाने वाली भाषा भी अपनी धरती के संस्कारों से जुड़ने लगती है। यह तो निश्चित है कि 19वीं शताब्दी नवजागरण का काल रही है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की विफलता के पश्चात् अंग्रेजों के अत्याचारों की स्मृतियां तब तक ताजा थीं। उन स्मृतियों ने संवेदनशील तथा सक्रिय भारतीय समाज को गहराई तक जोड़ दिया था। यही कारण है कि उस समय की पत्रकारिता आक्रोशमय थी। इसका प्रमाण उस समय निकलने वाले पत्र थे। विशेषकर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में निकलने वाले अखबारों के नाम ही देश में स्वतंत्रता की घोषणा करते हैं। युगांतर, क्रांति, विप्लव, स्वराज्य, प्रताप, स्वाधीनता, परिवर्तन, युग चेतना, भारत मित्र, स्वतंत्र भारत जैसे सैकड़ों समाचार पत्रों का प्रकाशन होता था। यह भारतीयों की उस इच्छा को प्रकट करता है, जो विदेशी शासन से स्वयं को मुक्त करना चाहती है। यह भारतीय राष्ट्रीय चेतना का संक्रमण कालखंड रहा हैं, जो नवीन इतिहास से सृर्जन के लिए तैयार था।

संदर्भ सूची :

1. इतिहासकार के परिवर्तनकारी अध्याय, त्रिवेणी प्रसाद शुल्क, पृ. 74
2. भारत में पत्रकारिता, लेखक डॉ. वेद प्रकाश अग्रवाल, पृ. 123
3. 'गांधी संमग्र' में उद्धृत अंश।
4. 'द लीडर', इलाहाबाद, मार्च 1913 में प्रकाशित सर जेम्स मेस्टन का भाषण।
5. 'भारतेंदु साहित्य में पत्रकारिता का समन्वय' डॉ. तपेश विश्वकर्मा, पाक्षिक विश्व संग्राम में प्रकाशित लेख, अंक 15 जनवरी, 2010
6. 'भारत में पत्रकारिता का इतिहास', वीरेंद्र पाठक, पृ. 123
7. 'द टाइम्स', लंदन 10 सितंबर 1906 उद्धृत नवभारत टाइम्स नई दिल्ली अंक 14 अगस्त 1983
8. 'केसरी' 15 जून 1897 में प्रकाशित लोकमान्य तिलक का भाषण।
9. 'हिंदी साहित्य का इतिहास', संपादक डॉ. नगेंद्र, पृ. 210